TS Krama Paatam – TS 4.2 Sanskrit Corrections – Observed till 31st August 2022

(ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

| Section, Paragraph | As Printed | To be read as or corrected as |
|----------------------|---|---|
| Reference | | |
| T.S.4.2.8.3 – Kramam | \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ | |
| Krama Vaakyam No 32 | तिभ्यः सपेभ्यः । सपे <mark>भ</mark> ो नमः । | तेभ्यः सपेभ्यः । सपे <mark>भ्य</mark> ो नमः । |
| Panchaati No 35 | | _ |

TS Krama Paatam – TS 4.2 Sanskrit Corrections – Observed till 31st Oct 2021

(ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

| Section, Paragraph Reference | As Printed | To be read as or corrected as |
|--|--|---|
| T.S.4.2.4.2 – Kramam Krama Vaakyam No 45 Panchaati No 15 | उपतिष्ठन्त आपः । उ <mark>प</mark> तिष्ठन्त । - । इत्युप – तिष्ठन्ते । | उपतिष्ठन्त आपः । उ <mark>प</mark> तिष्ठन्त । । इत्युप – तिष्ठन्ते । |
| T.S.4.2.4.4 – Kramam Krama Vaakyam No 52 Panchaati No 17 | रोचने दिवः । दि <mark>वः</mark> इति दिवः ॥ | रोचने दिवः । दि <mark>व</mark> इति दिवः ॥ |
| T.S.4.2.5.1 – Kramam Krama Vaakyam No 24 Panchaati No 18 | आऽकरम् । अकर <mark>मि</mark> त्यकरम् ॥ ———————————————————————————————————— | आऽकरम् । अकर <mark>मि</mark> त्यकरम् ॥ —— |
| | | |

| | | 1 |
|----------------------|--|--|
| T.S.4.2.5.1 – Kramam | | |
| Krama Vaakyam No 28 | अग्ने <mark>र</mark> यिमान् । रयिमान् पुष्टिमान् । | अग्ने रियमान् । रियमान् पुष्टिमान् । |
| Panchaati No 18 | | |
| T.S.4.2.5.1 – Kramam | | |
| Krama Vaakyam No 30 | रियमान् पुष्टिमान् । | रियमान् पुष्टिमान् । |
| Panchaati No 18 | ` i | ` _ ` |
| | रियमानिति रियमान । | |
| | | रयिमानिति रयि – मान् । |
| T.S.4.2.5.3 – Kramam | | |
| Krama Vaakyam No 54 | विदुर् निर्.ऋतिः । | विदुर् निर्.ऋतिः । निर्.ऋतिरिति । |
| Panchaati No 20 | | |
| | निर्.ऋतिरिति निः – ऋतिः । | निर्.ऋतिरिति निः – ऋतिः । |
| | ` | (highlighted krama vaakyam was omitted by |
| | | mistake in earlier versions, now inserted) |
| T.S.4.2.5.6 – Kramam | C CC | 0. (0) |
| Krama Vaakyam No 19 | सुमतिथ्सर्विति | सुमतिथ्सर्विति |
| Panchaati No 23 | | ~ |
| | सुमतिथ् – सरु ॥ | सुम <mark>ति – थ्सरु</mark> ॥ |
| T.S.4.2.6.1 – Kramam | - | |
| Krama Vaakyam No 32 | पुष्पावतीः प्रस्वतीः । पुष्वावतीरिति | पुष्पावतीः प्रसूवतीः । पुष्पावतीरिति |
| Panchaati No 24 | | |
| anchada No 24 | पृष्पं – वतीः। | पृष्प – वतीः। |
| | पुष्प – पताः । | 4 |
| T.S.4.2.7.3 – Kramam | 7 | |
| Krama Vaakyam No 51 | मानुषा युगा । <mark>य</mark> गिति युगा ॥ | मानुषा युगा । युगेति युगा ॥ |
| Panchaati No 31 | | |
| | | 1 |

| T.S.4.2.10.2 – Kramam Krama Vaakyam No 7 Panchaati No 43 | एकशफम् पशूनाम् । । । । एकशफ्मित्येक <mark>शुफ्म् ।</mark> | एकशफम् पशूनाम् । । प्राच्या एकशफ् <mark>मित्येक – शुफ्म</mark> । |
|---|---|--|
| T.S.4.2.11.2 – Kramam Krama Vaakyam No 45 Panchaati No 47 | उदुत्तमम् । उत्तममि <mark>त्यु</mark> त् – तमम् ॥ | उदुत्तमम् । उत्तममि <mark>त्यु</mark> त् – तमम् ॥ |
| " <mark>२न" replaced with "<mark>२ञ</mark></mark> | wherever applicable | |

TS Krama Paatam - TS 4.2 Sanskrit Corrections - Observed Prior to 31st Oct 2021

(ignore those which are already incorporated in your book's version and date)

| Section, Paragraph Reference | As Printed | To be read as or corrected as |
|---------------------------------|------------|-------------------------------|
| None | None | None |
